Hindi-CA July”24

1. धन्यवाद देना – “याह की स्तुति करो। यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; उसकी करुणा सदा की है” (भजन 106:1)। जब हम धन्यवाद देते हैं, तो हम प्राप्त उपहार को स्वीकार करते हैं। कृतज्ञता हृदय को खुशी से भर देती है। और प्रसन्न हृदय से भलाई और नम्रता प्रवाहित होती है।

2. सब कुछ प्रभु के लिए - "और तुम जो कुछ भी करते हो, चाहे वचन से या कर्म से, वह सब प्रभु यीशु के नाम पर करो, और उसके द्वारा परमपिता परमेश्वर को धन्यवाद दो" (कुलु. 3:17)। यदि हमारा ध्यान प्रभु पर है, तो हमें जो कुछ भी पूरा करने की आवश्यकता है उसमें अच्छा काम करने का आंतरिक संकल्प होगा।

3. धन्य – “धन्य है वह जो कंगाल की सुधी लेता है; विपत्ति के दिन यहोवा उसको बचाएगा” (भजन 41:1)। प्रभु, कृपया मेरी आंखें खोल कि मैं उन लोगों को देख सकूं जिन्हें आज मेरी सहायता की आवश्यकता है और मुझे उन तक आपकी भलाई पहुंचाने की अनुमति दें।

4. साझा करने के लिए - “वर्तमान समय में आपकी बहुतायत वह आपूर्ति करेगी जिसकी उन्हें आवश्यकता है, ताकि बदले में उनकी प्रचुरता वह आपूर्ति करे जो आपको चाहिए। तब समानता होगी” (2 कुरिन्थियों 8:14)। परमेश्वर हमारी चिंता करता है और रिश्तों को मजबूत करना चाहता है जब हम दूसरों की परवाह करते हैं।

5. प्रसन्नता- यहोवा को अपना सुख का मूल जान, और वह तेरे मनोरथों को पूरा करेगा(भजन 37:4)। जब हम पुरुष, प्रभु की खुशी के अलावा किसी भी चीज़ में अपनी संतुष्टि की तलाश करते हैं, तो हम विवाह के सबसे घनिष्ठ रिश्ते में भी निराश होंगे।

6. समझ - "तू अपने दास को अपनी प्रजा का न्याय करने के लिए समझने की ऐसी शक्ति दे, कि मैं भले बुरे को परख सकूं" (1 राजा 3:9)। जब सुलैमान ने प्रभु की खोज की और परख के साथ शासन किया, परमेश्वर के लोग वास्तव में धन्य थे। विनम्र बनें और सच्ची समझ के साथ अपने परिवार का नेतृत्व करने के लिए ईश्वरीय ज्ञान की तलाश करें।

7. संकल्प करें – “जागते रहो; विश्वास में स्थिर रहो; पुरुषार्थ करो; बलवंत बनो। और जो कुछ करते हो प्रेम से करो” (1 कुरिं. 16:13-14)। कुछ लोगों ने इस चेतावनी को कहा है: "बी-बी-बी-डू!" यह सच है कि इससे पहले कि हम प्रभु की इच्छा पूरी कर सकें, हमें उनके शिष्य बनना चाहिए और उनके वचन को सुनना चाहिए। आज ही अपने हृदय में ऐसा मनुष्य बनने का संकल्प करें।

8. समय - "हर एक बात का एक अवसर और प्रत्येक काम का, जो आकाश के नीचे होता है, एक समय है।" (सभोपदेशक 3:1-3)। प्रभु को आपको धैर्य और आत्मसंयम सिखाने की अनुमति दें। एक ऐसा व्यक्ति बनें जो परमेश्वर की आत्मा की धीमी आवाज पर ध्यान देता है और जो उसके मार्ग और समय पर चलता है।

9. चेतावनी - "मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो; और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ, और चिताओ, और अपने अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिए भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ।" (कुलु. 3:16)। मसीह में भाइयों के रूप में, हम एक दूसरे के लिए जिम्मेदार हैं। वचन का पालन करने वाले व्यक्ति बनें और परमेश्वर के साथ चलें। मसीह के साथ अपने अनुभवों के साक्षी बनें और अपने मित्रों को पहले उसे खोजने के लिए प्रोत्साहित करें।

10. कठोर गर्दन - "जो बार बार डांटे जाने पर भी हठ करता है, वह अचानक नाश हो जाएगा और उसका कोई भी उपाय काम न आएगा।" (नीतिवचन 29:1)। प्रेरितों के काम 7 में, इस्तीफीनुस ने यहूदी नेताओं को हठीले कहा क्योंकि उन्होंने हमेशा परमेश्वर की आत्मा का विरोध किया। उनका अंत विनाश था. डांटे जाने पर संवेदनशील रहें। परमेश्वर दीनों को अनुग्रह देता है।

11. दुर्व्यवहार - "इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का यही वचन है, मैं तलाक से घृणा करता हूं, और उस मनुष्य से भी घृणा करता हूं जो अपने वस्त्र को उपद्रव से ढांपता है" (मला. 2:16)। पतन के बाद से, इस दुनिया का राजकुमार विवाह और परिवार में परमेश्वर की योजना को नष्ट करने का प्रयास करता है। पुरुषो, सतर्क रहें और अपनी पत्नी से प्रेम करने की अपनी भूमिका स्वीकार करें जैसे मसीह कलीसिया से प्रेम करता है।

12. वासना - "...परमेश्वर के नहीं बल्कि सुख के प्रेमी" (2 तीमु. 3:2)। हम उस "भयानक समय" में जी रहे हैं जिसके बारे में बाइबल बात करती है। हमारे समय की सबसे आम बुराइयाँ नशीली दवाओं का दुरुपयोग, वेश्यावृत्ति और आत्मभोग हैं। लेकिन जहां तक आपकी बात है, पहले प्रभु की तलाश जारी रखें और आप बुराई के हमले का विरोध करने में सक्षम होंगे।

13. न्याय की तलाश करें - “उन्होंने हमें बिना किसी मुकदमे के सार्वजनिक रूप से पीटा… और अब वे चुपचाप हमसे छुटकारा पाना चाहते हैं? नहीं, वे आप ही आकर हमें बाहर ले जाएं” (प्रेरितों 16:37)। सुसमाचार के कारण पॉल को पीटा गया और कैद कर लिया गया। लेकिन उन्हें अपने कानूनी अधिकार पता थे. जैसे-जैसे उत्पीड़न बढ़ता है, सूचित रहें। सत्ता के मनमाने दुरुपयोग के ख़िलाफ़ खड़े हों।

14. दुष्ट का सामना करो – “इसलिए, परमेश्वर के अधीन हो जाओ, और शैतान का साम्हना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग जाएगा” (याकूब 4:7)। केवल परमेश्वर के पास ही शैतान पर विजय पाने की शक्ति है। इसलिए विनम्र विश्वास के साथ प्रभु के प्रति समर्पण करें और उसे अपने माध्यम से कार्य करने की अनुमति दें। आप उसकी शक्ति का अनुभव करेंगे, कमजोरी में परिपूर्ण बनेंगे, और पाप पर विजय प्राप्त करेंगे।

15. जुनून से भागो - "जवानी की बुरी अभिलाषाओं से भागो, और जो प्रभु को पुकारते हैं उनके साथ धर्म, विश्वास, प्रेम और शांति का पीछा करो" (2 तीमु. 2:22)। आपका आंतरिक स्वभाव और आपके रिश्ते आपकी पसंद को प्रभावित करते हैं। अपने हार्मोन और भूख की उत्तेजना का विरोध करें और उससे दूर भागें। उन लोगों से जुड़ें जो परमेश्वर के मानकों की खोज करते हैं।

16. अपनी मीरास ग्रहण करो - हे प्रभु, तू ने मसीह में मेरे लिये अद्‌भुत मीरास प्रदान की है। तुम, मेरा अंश हो—मेरा सर्वस्व हो। मेरे पास वह सब कुछ है जो मुझे आप में चाहिए। हे परमेश्वर, आपका धन्यवाद कि मसीह के साथ मेरे मिलन के कारण, मुझे अब एक गौरवशाली विरासत प्राप्त हुई है। मुझे अपनी महिमा के लिए जीने का मौका दो। (इफि. 1:11,12)

17. आपकी विरासत का प्रमाण - धन्य पवित्र आत्मा के माध्यम से मुझे अपना जीवन प्रदान करके मुझे मेरी विरासत देने के लिए धन्यवाद, भगवान। जिस क्षण मैंने प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास किया, मैं आपके साथ एक आत्मा बन गया। इसलिए अब मैं सुरक्षित हूं.' मेरे भीतर आपकी आत्मा मुझे अनन्त जीवन का आश्वासन देती है। (इफि. 1:13,14)

18. प्रकाशन - प्रिय परमेश्वर, मुझे अपनी आत्मा प्रदान करने के लिए धन्यवाद ताकि मैं आपको जान सकूं और आपके बारे में दूसरों को बता सकूं। मैं प्रार्थना करता हूं कि आप मुझे मसीह के ज्ञान में बुद्‌धि और प्रकाशन की आत्मा प्रदान करें ताकि मैं आपके योजनाओं को जान सकूं। मैं आप पर भरोसा करता हूं कि आप मुझे जो कुछ भी कहते और करते हैं उसमें ईश्वरीय बुद्‌धि का प्रयोग करवाएंगे। (इफि. 1:17)

19. चिन्ह - प्रिय यीशु, मुझे आप पर भरोसा करने में बहुत कठिनाई हो रही है। मैं कभी-कभी सोचता हूं कि मुझे आश्वस्त करने के लिए एक चिन्ह की आवश्यकता है, लेकिन अब मुझे एहसास हुआ कि आपकी मृत्यु और पुनरुत्थान पहले से ही सबसे बड़ा चिन्ह है। क्रूस दर्शाता है कि आप सर्वप्रेमी हैं, और पुनरुत्थान दर्शाता है कि आप सर्वशक्तिमान हैं। मेरे लिए इतना ही काफी है! (मत्ती 12:39,40)

20. परमेश्वर का रास्ता - प्रिय परमेश्वर, मुझे एहसास हुआ कि मैं गलत दिशा में जा रहा था। जीवन की डाँट के लिए धन्यवाद। तू ने मुझे मेरे चालचलन की त्रुटि दिखाई। इसलिए, मैं पश्चाताप करता हूं. मैं जीवंत तरीके से अपने पुराने तरीकों से आपकी ओर मुड़ता हूं। मुझे आत्मा से भर दो और मुझे अपने वचन सुनने का अवसर दो। मैं सही रास्ते पर चलना चाहता हूं. (नीतिवचन 1:23)

21. धन्य- "धन्य है वह मनुष्य जो प्रभु की व्यवस्था से प्रसन्न रहता है और दिन-रात उस पर ध्यान करता है... वह जो कुछ करता है उसमें सफलता मिलती है" (भजन 1:1-3)। आज प्रार्थना करें कि हमारे सर्वशक्तिमान प्रभु आपको ऐसा इंसान बनने में मदद करें।

22. परमेश्वर के साथ चलो - मतूशेलह के पिता हनोक के बारे में लिखा है: "हनोक परमेश्वर के साथ चलता था।" (उत्पत्ति 5:22) प्रार्थना करें कि परमेश्वर आपको अपना जीवन इस तरह जीने का अनुग्रह प्रदान करें कि आपके बारे में भी यही कहा जा सके।

23. आध्यात्मिक उन्नति - क्या आपको कभी-कभी संदेह होता है कि जहाँ आप काम कर रहे हैं वहाँ कोई वास्तविक आध्यात्मिक विकास है? यदि हां, तो चिंता न करें. इसके बजाय, प्रभु को धन्यवाद दें कि वह अपनी बुद्धि और समय के अनुसार फसल की देखभाल करेगा। "परमेश्वर चीज़ों को बढ़ाता है" (1 कुरिं. 3:7)।

24. आमंत्रित करने के लिए स्वतंत्र - मसीह यीशु के अनुयायी के रूप में, आप स्वर्ग के रास्ते पर अपने साथ अन्य लोगों को आमंत्रित करने के लिए स्वतंत्र हैं। प्रार्थना करें कि कई अन्य लोग यीशु मसीह को अपने मुक्तिदाता के रूप में पाएं और वचन और कर्म में आपकी गवाही के कारण अनन्त जीवन प्राप्त करें। (यूहन्ना 6:47)

25. अच्छा समापन - "मैंने अच्छी लड़ाई लड़ी है, मैंने दौड़ पूरी की है, मैंने विश्वास बनाए रखा है..." (2 तीमु. 4:7)। दौड़ में अंत ही मायने रखता है। यह नहीं कि आपके पास क्या है या आप क्या जानते हैं या आप क्या करते हैं, बल्कि यह निर्णायक है कि आप कौन हैं। क्या आप मसीह के शिष्य हैं जो अच्छी लड़ाई लड़ते हैं? प्रेरित पौलुस की तरह समाप्त करने के लिए प्रार्थना करें। भरोसा रखें।

26. प्रेम - "परन्तु आत्मा का फल प्रेम है" (गला. 5:22)। परमेश्वर के प्रेम की गुणवत्ता क्रूस पर सबसे अच्छी तरह प्रदर्शित होती है। वहाँ उसने संसार के पाप के लिये अपने इकलौते पुत्र, यीशु मसीह को दे दिया। पवित्र आत्मा मेरे और आपके हृदय में समान, निस्वार्थ प्रेम बढ़ाना चाहता है। आइए हम अपनी अहंकेंद्रितता का त्याग करें और उसे शासन करने दें।

27. आनन्द - "परन्तु आत्मा का फल... आनन्द है" (गला. 5:22)। जब परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में राज करेगा तो हम खुशी से आश्चर्यचकित हो जायेंगे। प्यार की तरह, यह आत्मा और जीवन को परिभाषित करने वाला उपहार है। जैसे ही हम मसीह के प्रति समर्पण करते हैं, उनकी आत्मा हमारे अंदर वास्तविक आनंद का संचार करती है। इस अद्भुत उपहार के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें जो किसी भी समस्या और प्रतिकूल परिस्थिति को मात देता है।

28. शांति - "पर आत्मा का फल शांति है" (गला. 5:22)। जब परमेश्वर का आत्मा हमारे हृदयों में शासन करता है तो हम शांति और सद्भाव का अनुभव करते हैं। क्रूस पर मसीह के मुक्ति कार्य के कारण हमारे पाप क्षमा किये गये हैं। हमारा जीवन सुरक्षित है क्योंकि हम परमेश्वर की संतान बनाये गये हैं। परमेश्वर के प्रेम को साझा करने और शांतिदूत बनने के लिए प्रार्थना करें।

29. धैर्य - "परन्तु आत्मा का फल... धैर्य है" (गला. 5:22)। यह उन चरित्र लक्षणों में से एक है जो हममें से अधिकांश पुरुषों में गायब है। इसमें दबाव में भी धीरज रखने का दृढ़ संकल्प शामिल है। अपने विचारों को शुद्ध करने और अपने आवेगों को नियंत्रण में रखने के लिए पवित्र आत्मा से प्रार्थना करें ताकि आप उसके समय और उसकी इच्छा को समझ सकें।

30. दयालुता - "परन्तु आत्मा का फल... दयालुता है" (गला. 5:22)। परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते की गुणवत्ता इस बात से झलकती है कि हम दूसरे लोगों से कैसे संबंध रखते हैं। परमेश्वर प्रेम है। वह आपके माध्यम से आपके जीवनसाथी, परिवार और अन्य लोगों से प्यार करना चाहता है। संवेदनशील होने और दूसरों की ज़रूरतों को पहचानने और वास्तविक दयालुता व्यक्त करने में सक्षम होने के लिए प्रार्थना करें।

31. भलाई - "जिस धर्म को हमारा पिता परमेश्वर शुद्ध और दोषरहित मानता है, वह यह है: अनाथों और विधवाओं के संकट में उनकी सुधि लेना" (याकूब 1:27)। जब युद्ध या मृत्यु बच्चों से उनके पिता या महिलाओं से उनके पतियों को छीन लेती है, तो वे दुर्व्यवहार के प्रति संवेदनशील हो जाते हैं। शुद्ध धर्म का आचरण करने वाला मनुष्य बनें। उन्हें अच्छाई दिखाने के तरीके खोजें।